International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 5 | May 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i5.53

समकालीन वैश्विक संकटों के संदर्भ में बौद्ध दर्शन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. सन्तराम पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी.जी. कॉलेज, बभनान, गोंडा (उ.प्र.)
Email: spal1190@gmail.com

Received: 07 May 2026 | **Accepted:** 19 May 2026 | **Published:** 29 May 2026

सारांश

समसामयिक मानव सभ्यता अभूतपूर्व बहुआयामी संकटों से जूझ रही है। जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, मानसिक स्वास्थ्य महामारी और भू-राजनीतिक संघर्षों ने पारंपरिक समाजशास्त्रीय मॉडलों की सीमाओं को उजागर कर दिया है। यह शोधपत्र समकालीन वैश्विक संकटों के निदान और समाधान के रूप में बौद्ध दर्शन का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बौद्ध अवधारणाएँ जैसे 'प्रतीत्यसमुत्पाद', 'अनित्य', और 'करुणा' केवल व्यक्तिगत मुक्ति के मार्ग नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संरचनाओं को समझने के महत्वपूर्ण उपकरण हैं। यह शोधपत्र 'सक्रिय बौद्ध धर्म' के ढाँचे के भीतर यह जांच करता है कि कैसे तृष्णा उपभोक्तावादी पूंजीवाद को बढ़ावा देती है और कैसे 'अहं' सामाजिक ध्रुवीकरण को जन्म देता है? अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन, आई.पी.सी.सी. रिपोर्ट और समकालीन सामाजिक आंदोलनों के संदर्भों का उपयोग किया गया है। गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए यह शोधपत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि बौद्ध समाजशास्त्र वैश्वीकरण के इस दौर में एक न्यायसंगत, टिकाऊ और शांतिपूर्ण वैश्विक समाज के निर्माण के लिए एक व्यावहारिक रूपरेखा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: *बौद्ध दर्शन, मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण संकट, वैश्विक शांति, असमानता, पूंजीवाद*

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य तकनीकी रूप से उन्नत होने के बावजूद सामाजिक और संरचनात्मक रूप से अत्यधिक खंडित है। आधुनिक समाजशास्त्रियों ने लंबे समय से तर्क दिया है कि औद्योगिक और उत्तर-औद्योगिक समाजों ने अलगाव और प्रतिमानहीनता को जन्म दिया है। जब हम वैश्विक स्तर पर युद्ध, शरणार्थी संकट, पर्यावरणीय गिरावट और नस्लीय भेदभाव को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि संकट केवल आर्थिक या राजनीतिक नही है, बल्कि गहरा दार्शनिक और नैतिक भी है। "आज का वैश्विक समाज अभूतपूर्व संकटों के दौर से गुजर रहा है। युद्ध, आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं मानवता के अस्तित्व को चुनौती दे रही हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ये समस्याएं केवल संरचनात्मक या संस्थागत नहीं हैं, बल्कि ये मानव व्यवहार, मूल्य प्रणाली और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं।"[1] ऐसे समय में गौतम बुद्ध का दर्शन एक नैतिक और व्यावहारिक विकल्प प्रस्तुत करता है। "बुद्ध ने मानव दुख के कारणों और उसके समाधान को समझने के लिए एक वैज्ञानिक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण अपनाया। उनका दर्शन किसी एक धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सार्वभौमिक जीवन-दृष्टि है।"[2]

बौद्ध दर्शन, जिसे पारंपरिक रूप से एक नैराश्यवादी या वैराग्यमूलक धर्म के रूप में देखा जाता रहा है, वास्तव में एक गहन सामाजिक दर्शन है। बुद्ध ने कभी भी समाज से अलग होकर जीवन जीने की वकालत नहीं की, बल्कि उन्होंने 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का सिद्धांत दिया। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य समकालीन संकटों को बौद्ध दर्शन के समाजशास्त्रीय चश्मे से देखना और यह विश्लेषण करना है कि कैसे प्राचीन भारतीय विचार आज के वैश्विक संकटों का समाधान कर सकते हैं?

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

बौद्ध दर्शन की मूलभूत अवधारणाएँ और समाजशास्त्रीय प्रासंगिकता

बौद्ध दर्शन को समाजशास्त्र के साथ जोड़ने के लिए इसकी तीन मूलभूत अवधारणाओं को समझना आवश्यक है:

- **प्रतीत्यसमुत्पाद-**

प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है—"इसके होने से, वह होता है।" कोई भी घटना या वस्तु स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं है। सब कुछ एक-दूसरे पर निर्भर है यानि कार्य-कारण सम्बन्ध। समाजशास्त्र में, हम इसे 'सामाजिक जाल' या 'वैश्विक अंतर्संबंध' कह सकते हैं। यदि अमेज़न के जंगलों में आग लगती है, तो उसका प्रभाव वैश्विक कार्बन उत्सर्जन पर पड़ता है। बौद्ध दर्शन इसे कॉस्मोलॉजिकल और समाजशास्त्रीय दोनों स्तरों पर समझाता है।

- **त्रिलक्षण-**

बुद्ध ने अस्तित्व के तीन लक्षण बताए हैं: अनित्य, दुःख, और अनात्म। आधुनिक समाज 'अनात्म' के सिद्धांत को नकार कर अत्यधिक व्यक्तिवादी बन गया है। जब व्यक्ति खुद को समाज से अलग एक स्वतंत्र इकाई मानता है तो वह केवल अपने स्वार्थ के लिए काम करता है, जिससे सामाजिक एकजुटता कमजोर होती है।

- **चार आर्य सत्य और सामाजिक निदान-**

बुद्ध के चार आर्य सत्य— दुःख, दुःख का कारण, दुःख का निरोध और दुःख निरोध का मार्ग ये मानव जीवन के मूलभूत सिद्धांत हैं। “समाजशास्त्रीय रूप से “दुःख” को सामाजिक असमानता, गरीबी, और मानसिक तनाव के रूप में देखा जा सकता है।“[3] बुद्ध के चार आर्य सत्य यानी दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध मार्ग वास्तव में एक समाजशास्त्रीय अनुसंधान पद्धति की तरह हैं। प्रथम सत्य समस्या की पहचान करता है (संकट), द्वितीय सत्य उसके कारणों की खोज करता है (संरचनात्मक दोष), तृतीय सत्य समाधान की संभावना दिखाता है (शांति), और चतुर्थ सत्य क्रियान्वयन का मार्ग (नीति) प्रदान करता है। “"“तृष्णा” आधुनिक उपभोक्तावाद का प्रतीक है, जो पूंजीवादी समाज में असंतोष और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है।“[4]

“अष्टांगिक मार्ग यानी सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाक्, कर्म, आजीविका, प्रयास, स्मृति और समाधि वास्तव में व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता का आधार प्रदान करता है। यह मार्ग सामाजिक नियंत्रण और आत्म-अनुशासन का एक संतुलित मॉडल प्रस्तुत करता है।“[5]

- **मानसिक स्वास्थ्य संकट और बौद्ध समाधान**

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार- “अवसाद और चिंता जैसी मानसिक बीमारियां वैश्विक स्तर पर प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएं बन चुकी हैं।“[6]

“बौद्ध ध्यान पद्धतियां विशेष रूप से विपश्यना, आधुनिक मनोविज्ञान में माइंडफुलनेस के रूप में अपनाई गई हैं। यह तकनीक तनाव को कम करने और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में प्रभावी सिद्ध हुई है।कॉर्पोरेट जगत में भी माइंडफुलनेस का उपयोग बढ़ रहा है, जैसे कि “Search Inside Yourself” कार्यक्रम जो कार्यस्थल पर मानसिक संतुलन और उत्पादकता को बढ़ाता है।“[7]

समकालीन वैश्विक संकट और बौद्ध समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

पारिस्थितिक संकट और जलवायु परिवर्तन

आज मानव जाति एंथ्रोपोसीन युग में जी रही है जहाँ मानवीय गतिविधियों ने पृथ्वी के पर्यावरण को बदल दिया है। आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट के अनुसार- “वैश्विक तापमान में वृद्धि ने पर्यावरणीय असंतुलन को गंभीर बना दिया है। “बौद्ध दर्शन पर्यावरण को मनुष्य से अलग नहीं मानता। 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के अनुसार, प्रकृति और मानव का अस्तित्व सह-आश्रित है। **थिच न्हात हान्ह** के अनुसार- “हम प्रकृति के बिना सांस भी नहीं ले सकते हैं। आधुनिक समाज ने प्रकृति को केवल एक 'संसाधन' मान लिया है जिसका दोहन किया जाना है। बौद्ध समाजशास्त्र 'अल्पेच्छता' यानी संतुष्टि की वकालत करता है जो आधुनिक सतत विकास का मूल आधार है।“[8]

उपभोक्तावादी पूंजीवाद और आर्थिक असमानता

आधुनिक आर्थिक नीतियां असीमित विकास के सिद्धांत पर टिकी हैं जो एक सीमित संसाधनों वाली पृथ्वी पर असंभव है। बुद्ध ने 'तृष्णा' को दुःख का मूल कारण माना है। पूंजीवाद विज्ञापन और मीडिया के माध्यम से समाज में कृत्रिम आवश्यकताएं पैदा करता है। इसे बौद्ध अर्थशास्त्र के जनक *ई.एफ. शूमाकर* ने अपनी पुस्तक *स्मॉल इज ब्यूटीफुल* में रेखांकित किया है। बौद्ध समाजशास्त्र 'राइट लाइवलीहुड' (सम्यक् आजीविका) पर जोर देता है अर्थात ऐसी जीविका जिससे किसी अन्य जीव या समाज को हानि न पहुँचे।

भू-राजनीतिक संघर्ष, युद्ध और आतंकवाद

यूक्रेन-रूस युद्ध, मध्य पूर्व का संकट और विभिन्न देशों के बीच बढ़ते परमाणु तनाव वैश्विक शांति के लिए खतरा हैं। बौद्ध समाजशास्त्र के अनुसार, युद्धों का मूल कारण 'अविद्या' (Ignorance) और 'द्वेष' (Hatred) है। जब राष्ट्र सामूहिक रूप से 'अहं' (National Ego) से ग्रस्त हो जाते हैं तो वे दूसरे देशों को 'अन्य' (The Other) के रूप में देखने लगते हैं। बुद्ध ने 'धम्मपद' में स्पष्ट कहा है: *"न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं" (शत्रुता से शत्रुता कभी शांत नहीं होती, वह केवल प्रेम से शांत होती है)।*

मानसिक स्वास्थ्य महामारी और अलगाव

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, अवसाद और चिंता दुनिया भर में विकलांगता के प्रमुख कारण बन रहे हैं। आधुनिक डिजिटल समाज में लोग जुड़े होने के बावजूद अकेले हैं। कार्ल मार्क्स ने पूंजीवादी समाज में जिस 'अलगाव' की बात की थी, बौद्ध दर्शन उसे 'स्वयं से अलगाव' के रूप में देखता है। जब व्यक्ति सम्यक् स्मृति खो देता है तो वह अतीत के पछतावे या भविष्य की चिंताओं में जीने लगता है। समकालीन समाज में माइंडफुलनेस का सामाजिक अनुप्रयोग लोगों को पुनः अपने परिवेश और समुदाय से जोड़ने का काम कर रहा है।

सक्रिय बौद्ध धर्म और सामाजिक परिवर्तन

20वीं सदी के उत्तरार्ध में वियतनामी भिक्षु *थिच न्हात हान्ह* ने *'एंगेज्ड बुद्धिज्म'* (सक्रिय बौद्ध धर्म) शब्द गढ़ा। इसका तात्पर्य यह है कि ध्यान केवल मठों के भीतर बैठकर करने की क्रिया नहीं है बल्कि समाज की पीड़ा को कम करने के लिए सड़कों पर उतरना भी बौद्ध अभ्यास है। "*डॉ. बी.आर. अंबेडकर* ने भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करते हुए इसे *'नवयान'* का नाम दिया। उन्होंने दिखाया कि कैसे बौद्ध धर्म का उपयोग जातिगत असमानता और सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक सामाजिक क्रांतिकारी उपकरण के रूप में किया जा सकता है। अंबेडकर के अनुसार, बुद्ध का धम्म स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का सामाजिक घोषणापत्र है।"[9]

अष्टांगिक मार्ग: एक वैश्विक सामाजिक नीति के रूप में

बुद्ध का आठ चरणों वाला अष्टांगिक मार्ग केवल व्यक्तिगत मोक्ष के लिए नहीं है, बल्कि इसे एक वैश्विक सामाजिक नीति के रूप में लागू किया जा सकता है:

1. **सम्यक् दृष्टि :** वैश्विक स्तर पर यह समझना कि सभी राष्ट्र और पर्यावरण एक-दूसरे से जुड़े हैं।
2. **सम्यक् संकल्प:** हथियारों की होड़ को छोड़कर वैश्विक कल्याण का संकल्प लेना।
3. **सम्यक् वाक्:** अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर घृणास्पद भाषण और दुष्प्रचार को रोकना।
4. **सम्यक् कर्म :** मानवाधिकारों की रक्षा और युद्ध अपराधों का पूर्ण निषेध।
5. **सम्यक् आजीविका:** कॉर्पोरेट घरानों द्वारा पर्यावरण और श्रमिकों के शोषण को रोकना।
6. **सम्यक् व्यायाम:** समाज में सकारात्मक और शांतिपूर्ण विचारों को बढ़ावा देना।
7. **सम्यक् स्मृति:** उपभोग के प्रति सचेत रहना कि हमारे निर्णय समाज को कैसे प्रभावित करते हैं।
8. **सम्यक् समाधि:** सामूहिक मानसिक शांति और स्थिरता के लिए काम करना।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

यद्यपि बौद्ध समाजशास्त्र वैश्विक संकटों का एक बहुत ही मानवीय समाधान प्रस्तुत करता है लेकिन इसकी अपनी सीमाएं और चुनौतियां भी हैं-

- **अत्यधिक व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण:** आलोचकों का तर्क है कि बौद्ध धर्म अक्सर संरचनात्मक परिवर्तन के बजाय व्यक्तिगत चेतना के बदलाव पर बहुत अधिक निर्भर करता है। जब तक राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों को बलपूर्वक नहीं परिवर्तित किया जाता, केवल नैतिक शिक्षाओं से कोई बड़ा परिवर्तन लाना कठिन है।
- **पूंजीवादी दुरुपयोग:** आधुनिक कॉर्पोरेट जगत ने बौद्ध 'माइंडफुलनेस' का वस्तुकरण कर दिया है। कंपनियां अपने कर्मचारियों को अधिक उत्पादक बनाने के लिए ध्यान सिखाती हैं ताकि वे बिना शिकायत किए शोषक व्यवस्था में काम करते रहें। इसे समाजशास्त्रियों ने 'मैकमाइंडफुलनेस' कहा है।
- **संरचनात्मक असमानता की उपेक्षा:** यह दर्शन अक्सर वर्ग, जाति और लिंग आधारित गहरे सामाजिक और आर्थिक शोषण को सीधे चुनौती देने के बजाय मानसिक शांति की बात करता है जिससे शोषक व्यवस्थाएं प्रायः वैसी ही बनी रह जाती हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन केवल आध्यात्मिक मार्ग नहीं है बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक सिद्धांत भी है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के स्तर पर परिवर्तन की संभावना प्रदान करता है। हालांकि, इसकी सीमाएं भी हैं। आधुनिक पूंजीवादी संरचना में इन सिद्धांतों को लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र यह स्थापित करता है कि बौद्ध दर्शन मानवता को एक संतुलित, न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण समाज की ओर ले जाने की क्षमता रखता है। यदि वैश्विक समाज इन सिद्धांतों को अपनाता है तो वर्तमान संकटों से उबरने की संभावना बढ़ सकती है। समकालीन वैश्विक संकट इस बात का प्रमाण हैं कि केवल वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति मानव जाति की सुख-शांति की गारंटी नहीं दे सकती। समाजशास्त्र को आज एक ऐसे आयाम की आवश्यकता है जो भौतिक संरचनाओं के साथ-साथ मानवीय चेतना का भी अध्ययन करे। बौद्ध दर्शन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि हमारे बाहरी संकट चाहे वह ग्लोबल वार्मिंग हो या युद्ध वास्तव में हमारे आंतरिक संकटों यह- लोभ, द्वेष और मोह के ही सामाजिक प्रकटीकरण हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद और करुणा के सिद्धांतों को वैश्विक नीतियों में शामिल करके हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध हो बल्कि नैतिक और मानसिक रूप से भी स्वस्थ हो। बुद्ध का मार्ग आज कोई धार्मिक विकल्प नहीं बल्कि मानव अस्तित्व को बचाए रखने की एक अनिवार्य सामाजिक आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

[1]. Giddens, A. (2021), Sociology (9th ed.), Polity Press, pp.:85–102.

[2]. Harvey, P. (2013), An introduction to Buddhism, Cambridge University Press, pp:33–50.

[3]. Durkheim, E. (2002), Suicide: A study in sociology, Routledge, pp.:152–170.

[4]. Bauman, Z. (2007), Consuming lif, Polity Press, pp.:12–30.

[5]. Kabat-Zinn, J. (2005), Full catastrophe living, Delta Publishing, pp.:3–25.

[6]. Tan, C. M. (2012), Search inside yourself, HarperCollins, pp. 60–75.

[7]. IPCC. (2025). Climate change report, Chapter-2, pp.:101–145.

[8]. Hanh, Thich Nhat. (1998), The Interbeing. Berkeley, Parallax Press, pp.:12-29.

[9]. Ambedkar, B. R. (1957), The Buddha and His Dhamma, Siddharth Publication, pp.:45-6.2

Cite this Article:

सन्तराम पाल (2026). समकालीन वैश्विक संकटों के संदर्भ में बौद्ध दर्शन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(5), 20–23.

Journal URL: *https://ijhce.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i5.53*